

## मरना कैसे चाहिए?

1- मरना जीते जी अच्छा है, क्योंकि इसमें तो मरने के बाद भी कमाई होती रहती है। लोग तो कहते हैं बिना मरे स्वर्ग नहीं जायेंगे पर वहाँ कोई जाता नहीं, पर जीते जी मरने पर स्वर्ग जाना क्या बड़ी बात स्वर्ग के मालिक ही बन जाते हैं। जीते जी मरने के बाद जब प्राण तन से निकलते हैं तो प्रायः यह और हो जाता है तो बहुत ही अच्छा कि फिर कोई पुरानी बात याद न आये नहीं तो जैसे कई लोग मर-मर कर जीते हैं या जिन्दा होते हुए भी मुर्दे की तरह पड़े रहते हैं, उनकी मौत सारे सम्बन्धि बुलाते रहते हैं फिर भी वह नहीं आती है और आती भी है तो लोगों को खुशी होती है पर उसको खाली हाथ जाना पड़ता है क्योंकि लम्बे समय की शारीरिक भोगना मन को दुखी, चिन्तन को निरोधी, भावना क्लुषित बना देती है जिससे अन्त मती अच्छी नहीं होती। पर लोगों को सुकून मिलता है।

2- दूसरा मरना मैं-पन से अच्छा, जिससे सबको सुख व खुशी दे सकते, जिसके कारण दुआओं के पात्र बनते और खुद की शान्त चित्त व खुश रह सकेंगे। ऐसा मरना आज के संसार की परम आवश्यकता है, सारा झगड़ा इसी बात के कारण होता है। हम समझते हैं यह मरना बहुत ही अच्छा है पर यह मरना आज कल बड़ा मुश्किल लगता है।

3- तीसरा मरना जो बाबा कहते हैं ज्ञानामृत मुख में हो, भगवान का दर हो, परमात्मा स्मृति में हो तब प्राण तन से निकले। यह मरना भी बहुत अच्छा होगा। अन्त अच्छा तो सब अच्छा।

4- चौथी प्रकार का मरना जब लक्ष्य पूर्ण हो गया हो, जीवन में सन्तुष्टता आ गयी हो, सम्बन्ध मधुर हो, सभी लोग सन्तुष्ट हो, सबकी दुआयें साथ हो, शरीर की भोगना न हो, जीवन पूरा जी लिया हो, अच्छी कमाई जमा हो और सहज शरीर से प्राण तन से निकले। यह मरना भी अच्छा।

5- पांचवी मौत हृदयघात की मौत अच्छी वह भी अगर साइलेन्ट अटैक हो तो बहुत अच्छा। जिसमें न कोई मरने का भय न भविष्य की चिन्ता, न शरीर की भोगना न पैसे की बर्बादी, न सम्बन्धियों से सेवा लेने की चिन्ता, न तो दवाइयों को खाने का दुख। यह मौत भी अच्छी है।